"वैज्ञानिक विधि द्वारा लाह की खेती से ग्रामीणों का सामाजिक एवं आर्थिक उत्थान" विषय पर दिनांक 9 - 14, फरवरी 2015 तक छह दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम

"वैज्ञानिक विधि द्वारा लाह की खेती द्वारा ग्रामीणों का सामाजिक एवं आर्थिक उत्थान" विषय पर छह दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन आज दिनांक 9 फरवरी 2015 को भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, भारत सरकार, पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, नयी दिल्ली के अंतर्गत वन उत्पादकता संस्थान, लाल्गुटवा, रांची के सम्मेलन कक्ष में हुआ। प्रशिक्षण कार्यक्रम में विभिन्न ग्रामों से आये 30 प्रगतिशील कृषकों के अलावा प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रायोजक, राज्य ग्रामीण विकास संस्थान, झारखण्ड, राँची एवं गैर सरकारी संगठन के प्रतिनिधियों ने भाग लिया.

प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन संस्थान के निदेशक डॉ एस. ए. अंसारी एवं अन्य गणमान्य अतिथिगण के द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया. डॉ अंसारी ने किसानों के सामाजिक उत्थान के लिए वैज्ञानिक तरीके से लाह की खेती के बारे में विस्तार से व्याख्यान दिया। कि किसान अब तक परम्परागत तरीके से जो लाह की खेती करते आये हैं, उन्ही तरीकों को वैज्ञानिक विधि के द्वारा सुधार की ज़रूरत है ताकि किसानों को ज़्यादा से ज़्यादा लाभ मिल सके। लाह की खेती के समय प्रबंधन पर भी ज़ोर देते हुए किसानों को सचेत किया। उन्होंने कृषकों से विशेष रूप से आग्रह किया कि खेती के दौरान आनेवाली समस्याओं पर अपने विचारों से वैज्ञानिकों को अवगत कराएँ जिससे उन समस्याओं का त्वरित समाधान इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में किया जा सके. संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. ए. के. पांडेय, वन संवर्धन एवं अकाष्ठ वन उत्पाद प्रबंधन विभाग के प्रमुख ने भी उन्नत वैज्ञानिक विधियों द्वारा लाह के क्षेत्र में विकास पर ज़ोर दिया । डॉ शरद तिवारी, प्रमुख, कृषि वानिकी एवं विस्तार प्रभाग ने प्रशिक्षण कार्यक्रम की रुपरेखा प्रस्तुत की तथा औपचारिक रूप से प्रशिक्षण कार्यक्रम का प्रारंभ किया। डॉ. संजय सिंह, वन कार्यिकी एवं आणविक जीव विज्ञान विभाग के प्रमुख ने प्रशिक्षण कार्यक्रम का संचालन किया ।

छह दिनों तक चलने वाले इस कार्यक्रम में प्रमुख रूप से कृषकों को लाह कीट का परिचय एवं जीवन चक्र, लाह पोषक पौध एवं पौधों का बीज द्वारा उत्पादन एवं प्रबंधन, शत्रु कीट का प्रकोप, रोग एवं उनसे वचाव के उपाय, लाह प्रसंस्करण, लाख के उत्पाद, इसका आर्थिक महत्व एवं लाह बाजार, लाह आधारित कृषि वानिकी, सामुदायिक आधारित लाह खेती का महत्व एवं उसकी औषधीय उपयोगिता आदि विषयों पर विस्तार से चर्चा कि जायेगी.

डॉ एस. ए. अंसारी, निदेशक द्वारा प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन

डॉ कनक, राज्य ग्रामीण विकास संस्थान, रांची की प्रतिनिधि

प्रशिक्षण कार्यक्रम की शुरुआत

प्रशिक्षण कार्यक्रम में शामिल प्रतिभागी एवं संस्थान के वैज्ञानिक